International Journal of Applied Research 2019; 5(1): 51-53

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(1): 51-53
www.allresearchjournal.com
Received: 21-11-2018
Accepted: 24-12-2018

प्रीति प्रिया
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

Corresponding Author:
प्रीति प्रिया
शोधार्थी, विश्वविद्यालय, इतिहास विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत।

पुराणों में विद्यमान सती अख्यान का मिथिला से सम्बन्ध

प्रीति प्रिया

सारांश
वेदों को भारतीय संस्कृति का मूल उद्गम स्थल माना गया है। अन्य भारतीय धर्मो के समान ही शाक्त धर्म का मूलगम उद्गम स्थान वेद ही रहे है। प्रारंभिक काल में सभी धर्म प्रकृति के प्रति आस्थावान रहे हैं। नदियों, वृक्षों और पर्वतों की पूजा जो वर्तमान काल में भारतीय समाज में प्रचलित हैं, वह प्राग्ऐतिहासिक काल में भी विद्यमान थी। प्रकृतिमूलक यह पूजा, मृदुता या अन्य विश्वास पर आधारित नहीं थी अपितु सौन्दर्य दर्शन की भावानुभूति की प्रतीक थी। जो आगे चलकर शक्ति पूजा में परिणित हुई।

प्रस्तावना
शाक्त धर्म में मातृत्व की भावना को ही मुख्य रूप से अंगीकार किया गया है। [1] ऋग्वेद में ईश्वर के मातृरूप को 'अदिति' कहा गया है [1] जो विश्व के अचल आधार के रूप में मान्य है। [2] ऋग्वेद के एक अन्य सूक्त में अदिति का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है।
अदिति स्वर्ग लोक में है तथा स्वर्ग और भूलोक के बीच जो अंतरिक्ष (दयुलोक) है, वह वहाँ भी विद्यमान है। वह समस्त देवों की जननी है। सबकी पिता एवं रक्षक भी वही है। वह स्रष्टा और सृष्टि दोनों ही है। अपने उपासकों की आत्माओं को वह अपनी अनुकम्पा द्वारा पापों से मुक्त कर देती है। वह सभी देवताओं तथा दिव्य आत्माओं के विग्रह में निवास करती है। भूत एवं भव्य सब कुछ उसी का रूप है। वही सब कुछ है [3] वेद में जो उल्लेख है कि ''अजा'' अनेक प्रजा की उत्पत्ति हुई, वह अजा वही आद्या शक्ति है, विश्व की अखिल सत्ता चेतनता, ज्ञान, प्रकाश, आनन्द, क्रिया, सामर्थ्य आदि सभी इसी शक्ति के कार्य है। [4]
ब्राह्मण ग्रंथों में दक्ष–यज्ञ कथानक विकसित रूप में हमें प्राप्त होता है। ऋग्वेद में प्रजापति का अपनी पुत्री के साथ प्रजनन कर्म (मेथुनी भाव) बताया गया है। ब्राह्मण ग्रंथों में प्रजापति के इस अकृत्य अर्थात् दुहितागमन के परिणाम स्वरूप देवता रूष्ट हो गये और उन्होंने रूद्ध से दण्ड स्वरूप प्रजापति के रेत (वीर्य) का छेदन करा दिया। शतपथ ब्राह्मण [5] ऐतरेय ब्राह्मण [6] एवं ताण्डव ब्राह्मण [7] में दक्ष–यज्ञ कथानक का वर्णन निम्न प्रकार किया गया है–
किसी समय प्रजापति जिसकी यज्ञ के साथ समानता प्रदर्शित की गई है, अपनी पुत्री दयौ अथवा ऊषा के साथ मैथुनी भाव वाला हुआ। प्रजापति के इस अकृत्य अर्थात् दुहितागमन से देवता रूष्ट हुए और वे सभी देव रूद्र के पास गये तथा रूद्र से प्रार्थना की कि वह प्रजापति का बेधन करें। रूद्र ने अपने वाण से प्रजापति पर प्रहार किया जिससे प्रजापति का रेत (वीर्य) खण्डित होकर भूमि पर गिरा। चूँकि प्रजापति स्वयं यज्ञ के रूप में सम्पादित थे, अतः उनके शरीर का कोई भाग बिना यज्ञ में उपयोग लाए फेका नहीं जा सकता था। अतः देवताओं ने पहले प्रजापति के वीर्य को भग जो कि यज्ञ वेदी के दक्षिण में अवस्थित था को प्रस्तुत किया। भग ने प्रजापति के उस वीर्य की ओर जैसे ही दृष्टिपात किया, उसकी आँखें जल गई। देवताओं ने फिर उस रेत (वीर्य) को पूषन के पास ले गये, पूषन ने जैसे ही उस वीर्य को चखा वह दन्त विहीन हो गया।
शाक्त सम्प्रदाय में सती कथा का प्रमुख स्थान है। दक्ष प्रजापति द्वारा किये गये यज्ञ में शिव एवं सती को आमंत्रित न करने पर अथव बिना निमंत्रण के ही यज्ञ स्थल पर जाने पर उसके पिता द्वारा अपमानित करने पर सती ने योग अग्नि द्वारा अपने प्राणों को देह से अलग कर दिया। शिव अपनी पत्नी सती में अत्यधिक मोहित होने के कारण प्राणहीन मृतदेह को अपने कंधों पर लेकर उन्मत्त भाव से त्रिलोक में भ्रमण करने लगे। शिव को ऐसी मोहित स्थिति से मुक्त करने हेतु विष्णु ने अपने चक्र द्वारा मृत सती के देह के विभिन्न अंगों को काट–काटकर मृत सती के अंग पृथ्वी के विभिन्न भागों में गिरने के कारण इन स्थानों की गणना शाक्त धर्म परम्परा में शाक्त तीर्थों के रूप में हुई। सती कथा का प्रथम उल्लेख ''ऋग्वेद'' में प्राप्त होता है। ऋग्वेद में यद्यपि दक्ष–यज्ञ कथानक का पूर्ण

प्रचार–प्रसार नहीं हुआ है, परन्तु इसमें पिता दक्ष, प्रजापति का अपनी पुत्री उषा के साथ प्रजनन कार्य का संबंध दिखाया गया है। [8]

शतपथ ब्राह्मण, ऐतरेय ब्राह्मण एवं तेतरेय ब्राह्मण के उपर्युक्त कथानक से कुल विकसित स्वरूप गोपथ ब्राह्मण में प्राप्त होता है। गोपथ ब्राह्मण [9] के अनुसार एक समय प्रजापति के यज्ञ करते समय रूद्र को उनका उचित भाग अर्पण नहीं किया गया अतः रूद्र ने यज्ञांग का एक भाग छेदन (काटकर) कर दिया। इस दृश्य को देखकर भग अंधा हो गया और पूषनदत्त विहीन हो गया।

गोपथ ब्राह्मण के उपुर्यक्त कथानक से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्रजापति ने रूद्र को यज्ञ भाग नहीं दिया। परिणामस्वरूप रूद्र ने दण्डस्वरूप प्रजापति का छेदन कर दिया। गोपथ ब्राह्मण के इसी कथानक को महाभारत तांत्रिक ग्रन्थों, और पुराणों में विस्तृत स्वरूप से देखा जाता है। पुराणों में दक्ष–यज्ञ के कथानक को विभिन्न आख्यानों से जोड़ा गया है।

महाभारत में दक्ष–यज्ञ कथानक का विकसित रूप प्राप्त होता है। महाभारत के अनुसार दक्ष–यज्ञ कथानक निम्न प्रकार हैः– दक्षप्रजापति ने किसी काल में अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन गंगाद्वार में (अब गंगद्वार हरिद्वार में) में किया। जिसमें सभी देव उस यज्ञ में सम्मिलित हुए परन्तु शिव को उस यज्ञ में नहीं बुलाये गये। सती ने यज्ञ में न जाने का कारण पूछा तो शिव ने बताया कि देवताओं ने पूर्व में जो अनुष्ठान किया है, उसमें मेरे भाग की परिकल्पना नहीं की है। अतः उसी परम्परा के अनुसार ही देवों ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ में हमें नहीं बुलाया है। तब सती ने कहाकि मुझे अति दारूण दुःख है और मेरा शरीर कम्पयमान हो रहा है।

शिव ने देवी (उमा) के जलते हुए चित्त को जानकर महातेज भष्म भयंकर गणों की सहायता से शिव ने उस प्रजापति के यज्ञ को नष्ट कर दिया। [10] दक्ष प्रजापति की पुत्री एवं शिव की पत्नी सती से संबंधित दक्ष–यज्ञ कथानक का विकास महाभारत काल तक हो चुका था। महाभारत से ज्ञात होता है कि शिव को यज्ञ में भाग इसलिए नहीं दिया गया। क्योंकि पहले भी शिव को कोई भाग नहीं दिया जाता था। ऐसा इसलिए होता था क्योंकि शिव को अनार्या के देवता माना जाता था और उन्हें वैदिक देवों में मान्यता प्राप्त नहीं थी। यज्ञ में शिव को कोई भाग नहीं दिया है। यह जानकर सती क्रोधित हो गई। परिणामस्वरूप शिव ने विभिन्न गणों की सहायता से दक्ष के यज्ञ को नष्ट कर दिया। पुराणों में भी इस कथानक को विस्तृत रूप दिया गया है और इस यज्ञ से संबंधित आख्यानों को जोड़ा गया है।

पौराणिक काल में सती से संबंधित दक्ष–यज्ञ कथानक का पूर्ण रूप से विकास हो चुका था। यही कारण है कि प्रायः सभी पुराणों में एवं उपपुराणों में दक्ष–यज्ञ कथा का उल्लेख प्राप्त होता है।(11) प्रजापति दक्ष के यज्ञ के विध्वंश का कारण प्रजापति दक्ष एवं शिव में द्वेष ही प्रमुख कारण रहा। भागवत पुराण में प्रजापति एवं शिव के द्वेष का उल्लेख एक आख्यान के रूप में हुआ है। एक समय प्रजापतियों के यज्ञ में सब बड़े–बड़े ऋषि, देवता, मुनि, अग्नि आदि अपने–अपने अनुयायियों सहित उपस्थित थे। उस समय प्रजापति दक्ष ने भी उस सभा में प्रवेश किया तो शिव (महादेव) के अतिरिक्त सभी देवों ने अपने–अपने आसनो से उठकर उनका स्वागत किया। प्रजापति दक्ष ने तभी से शिव से द्वेष रखना आरंभ कर दिया। [12]

ब्रह्मा जी द्वारा प्रजापति दक्ष को प्रजापतियों का अग्रणी बनाये जाने पर दक्ष ने पहले तो वाजपेय यज्ञ किया और फिर वृहस्पति स्तवन नामक एक महायज्ञ का प्रारंभ किया जो कि जान–बूझकर शिव को ही तिस्कृत करने के लिए किया गया था। [13] जिसमें शिव को आमंत्रित नहीं किया गया था। स्कन्दपुराण में शिव को आमंत्रित न करने का कारण अमंगल, अकुलीन, वेद बाह्य, भूत, प्रेत, पिशाच, आदि का रक्षक बताया गया है। [14] शिव पुराण [15], एवं कालिका पुराण [16] पद्मपुराण [17] में भी उपर्युक्त वर्णित अयोग्यता के कारण ही शिव को दक्ष ने आमंत्रण और यज्ञ भाग नहीं दिया था। [18]

देवी भागवत पुराण में सती का अपमान होने का उपर्युक्त किसी कारणों में से न होकर एक अन्य कारण बताया गया है। देवी भागवत पुराण के आख्याना के अनुसार एक समय दुर्वासा ऋषि ने जम्बूनद वाहिनी नदी के तट पर स्थित देवी का दर्शन किया और दर्शन करने के उपयुक्त भगवती देवी ने प्रसन्न होकर मकरन्द गन्ध से प्रमोदित कण्ठ स्थित मनोहर एवं दिव्य माला प्रसाद स्वरूप प्रदान की। भगवती का दर्शन करने के उपरान्त दुर्वासा ऋषि दक्ष प्रजापति के यहाँ आए। दुर्वासा ऋषि के गले में अतिदिव्य एवं मनोहर माला को देखकर दक्ष प्रजापति ने मांग ली। दक्ष प्रजापति ने यह माला दम्पति की अति मनोहर शय्या पर रख दी। और रात्रि काल के समय उन दिव्य पुष्पों की माला की सुगन्ध से आमोदित होकर सुरति कार्य में आसक्त हुये। प्रजापति दक्ष के द्वारा उस पशु कर्म के निबन्धन के कारण सती देवी और शिव के प्रति विद्वेष हुआ जिससे वे शिव की निन्दा करने लगे। उसी अपराध से सती ने सनातन पतिव्रत धर्म के मर्यादा की रक्षा करने हेतु दक्ष प्रजापति जनित देह को त्यागने का निश्चय किया। [19]

देवी भागवत पुराण के उपर्युक्त आख्यान से यह निष्कर्ष निकलता है कि प्रजापति दक्ष ने दुर्वासा ऋषि से प्राप्त दिव्य माला जो आद्यशक्ति महामाया ने दुर्वासा को प्रसाद स्वरूप दी थी, उसका अपमान करने का अर्थ है कि अप्रत्यक्ष रूप से देवी 'सती' का अपमान करना।

विभिन्न पुराण ग्रन्थ प्रायः इस तथ्य पर एकमत है कि शिव की पत्नी सती को प्रजापति दक्ष द्वारा यज्ञ में आमंत्रित नही किया और वे बिना निमंत्रण के ही यज्ञ में सम्मिलित हुई। जहाँ सती को दक्ष–यज्ञ में शिव का भाग न होने के कारण अपमानित होना पड़ा। भागवत पुराण [20] पद्म पुराण [21], स्कन्द पुराण [22] आदि पुराण यही उल्लेख करते हैं कि सती बिना निमंत्रण के ही पिता दक्ष के यज्ञ में गई जहाँ अपमानित होना पड़ा। कालिका पुराण में दक्ष प्रजापति ने यह कहकर अपमान किया है कि शिव कापाली है। सती उसकी भार्या है। अतः शिव यज्ञ में निमंत्रित करने के योग्य नहीं है। [23] देवी भागवत पुराण [24] में सती के यज्ञ में जाने और न जाने का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता है।

प्रचेता के पुत्र दक्ष प्रजापति ने वैवस्वत मन्वत्तर में गंगा द्वारा अर्थात आधुनिक कनखल में एक अश्वमेघ यज्ञ का आयोजन किया। उसमें देवता, असुर, पितर और महर्षि जब बड़ी प्रसन्नता के साथ पधारे। देवराज इन्द्र अपनी पत्नी शाची के साथ, पापियों का दमन करनेवाले यमराज की धूमोर्णा के साथ, वरूणदेव अपनी पत्नी वरूण्य (गौरी) के साथ यक्षों के राजा कुबेर भी अपनी पत्नी के साथ देवताओं के मुख स्वरूप अग्निदेव वायु अपने उनचास गणों के साथ, लोकपावन सूर्यदेव अपनी भार्या उषा प्रत्लूषा, प्रलम्बूषा के साथ, महान् यशश्वी भी अपनी पत्नी (लीली औचनाई शिव पुत्रियाँ) के साथ उस दक्ष के यज्ञ में सम्मिलित हुए। देवताओं के अतिरिक्त नाग, यक्ष, गरूड़, लताएँ, औषधियाँ, वत्स, भगवान, अत्रि, पुलस्य, कुतु प्रचेता, अंगिरा तथा महातपस्वी वशिष्ठ भी उपस्थित हुए। स्थावर, जङ्गम सभी प्रकार के जीव, प्राणी वहाँ उपस्थित थे। आठों वसु, बारहों आदित्य, दोनों अश्विनी कुमार, उन्चासों रूद्रगण तथा चौदहों मनु भी वहाँ आए हुए थे। इसी समय ब्रह्मा भी अपने पुत्रों के साथ आकर यज्ञ के सभासद् हुए तथा साक्षात् भगवान विष्णु भी यज्ञ की रक्षा के लिए वहाँ पधारे। इनके अतिक्ति वृक्ष, वनस्पति, गन्धर्व अपसरायें, विद्याधर और भूतों के समुदाय, वेताल, यज्ञ, राक्षस, पिशाच और दूसरे प्राणधारी जीव मौजूद थे।

वहाँ सब ओर से वेदी बनाकर उसके ऊपर चातुर्होत्र की स्थापना हुई। उस यज्ञ में महर्षि वशिष्ठ होता, अंगिरा, अध्वर्यु, वृहस्पति उद्गाता तथा नारद ब्रह्मा हुए। चारों ओर से दस योजन भूमि यज्ञ के समारोह से पूर्ण थी। इस प्रकार यज्ञ होने लगा और आहुतियाँ पड़ने लगी। दक्ष प्रजापति के इस यज्ञ में भक्ष–भोज्य

सामग्री का बहुत ही सुन्दर ठाट–बाट था। वहाँ साक्षात् ऐश्वर्य की पराकाष्ठा दिखाई देती थी। ऐसे महायज्ञ में प्रजापति दक्ष ने सती और अपने जामाता शिव को आमंत्रित नहीं किया।

पौराणिक आख्यान प्रायः इस तथ्य पर एकमत है कि शिव की पत्नी सती को प्रजापति दक्ष द्वारा यज्ञ में आमंत्रित नहीं करने के कारण अथवा बिना निमंत्रण के ही यज्ञ स्थल पर पहुँची, परन्तु यज्ञ में शिव का कोई भाग न होने के कारण अथवा दक्ष प्रजापति द्वारा उपर्युक्त कारणों में से न होकर अन्य किसी कारण से अपमानित होने पर सती ने योग द्वारा अपने प्राणों को देह से पृथक् कर दिया। परन्तु शोध का विषय है कि सती ने देह त्याग किस स्थान पर किया। पुराण ग्रन्थों में सती के देह स्थान को लेकर मतभेद प्राप्त होता है। कतिपय पुराणों के अनुसार जब सती को यह ज्ञात हुआ कि उसके पिता दक्ष प्रजापति के यहाँ एक बड़े यज्ञ का आयोजन है, तब सती शिव की आज्ञा से मुक्त होकर विभिन्न गणों के साथ यज्ञ स्थल पर पहुँची। जहाँ पर प्रजापति दक्ष द्वारा उसको अपमान किया गया। [25] पद्म पुराण [26] से ज्ञात होता है कि पिता द्वारा अपमानित होने पर सती ने गंगाद्वार [27] पर ही योग द्वारा प्राण त्याग दिये और वह स्थान (शौनक तीर्थ) के नाम से प्रसिद्ध है। कालिका पुराण और वाराह पुराण में सती देह त्याग कथानक थोड़ा भिन्न रूप में प्राप्त होता है। कालिका पुराण के अनुसार सती द्वारा यह ज्ञात हो जाने पर कि पिता दक्ष ने यज्ञ में इसलिए आमंत्रित नहीं किया कि शिव कापाली है और सती कापाली की भार्या है। यह सुनकर ही उन्होंने योग द्वारा अपने आश्रम पर ही प्राण त्याग दिये। [28] वाराहपुराण [29] में सती देह त्याग का कारण उपर्युक्त कथानकों से भिन्न प्राप्त होता है। दक्ष यज्ञ में शिव का भाग न होने के कारण शिव ने दक्ष–यज्ञ विध्वंस कर दिया। सती यह जानकर कि शिव पिताद्रोही है, अपने प्राण त्याग दिये।

पुराणों में दक्ष प्रजापति द्वारा यज्ञ प्रारंभ करने से लेकर यज्ञ को नष्ट करने तथा उसके पश्चात् शिव की देवों के महत्ता तक विभिन्न आख्यानों का विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। महाभारत में शिव को त्रिगुण युक्त दिखाया गया है, जबकि पुराणों में शिव समता ब्रह्म के साथ की गई है जिसकी इच्छा मात्र से ही सम्पूर्ण कार्य सम्पन्न होते है।

निष्कर्ष :

पुराण ग्रन्थों के उपर्युक्त आख्यान सती देह त्याग स्थान एक निश्चित त्याग स्थान को दर्शाने में सक्षम नहीं है। कुछ पुराण ग्रन्थ देह त्याग स्थान गंगा द्वार अर्थात् हरिद्वार ही बतलाते हैं, जहाँ दक्ष प्रजापति में यज्ञ किया था। परन्तु कालिका पुराण और वाराहपुराण सती देह त्याग स्थान शिव के आश्रम की ओर ही संकेत करते है। ये सभी पुराण इस तथ्य पर तो एकमत है कि प्रजापति दक्ष ने हरिद्वार अर्थात् गंगाद्वार में यज्ञ का आयोजन किया था। अतः अधिक संभावना सती के देह त्याग का स्थान गंगाद्वार अर्थात् हरिद्वार के समीप कनखल के यक्ष कुण्ड में ही प्रतीत होता है। पौराणिक आख्यानों से ज्ञात होता है कि शिव की पत्नी सती ने योग के द्वारा प्राण त्याग दिये। पुराणों में सती ने जिस योग विधि से प्राणों को देह से पृथक् किया उसी विधि का यहाँ वर्णन किया गया है।

संदर्भ–सूची :

1. ऋग्वेद–10/125/1–8।
2. दयौ में पिता, जनिता, नायिशास्त्र बन्धुर्मे माता पृथिवी महीषम्, ऋग्वेद मण्डल–2, अध्याय–20, सूक्त–164/33।
3. ऋग्वेद–2/6/17।
4. देव्यथर्वशीर्ष।
5. शतपथ ब्राह्मण–मध्यदिन शाखा ग्रन्थ, प्रथम अध्याय–7/4/1–7।
6. ऐतरेय ब्राह्मण–3/33।
7. ताण्डय ब्राह्मण–8/2/10–11।
8. ऋग्वेद–10/6/5–7।
9. कंस्यचित्क्य कालस्य दक्ष नाम प्रजापतिः। पूर्वोक्तेन विधानेन यज्ञ माणो न्वपद्यत्।।9।।
   दवो नाम महाभागे प्रजानां पतिरूत्तमः। हयमेधेन यजते यज्ञ यान्ति दिवौकसः।।20।।
10. कस्य चित्क्वय कालस्य दक्ष नाम प्रजापतिः। पूर्वोक्तेन विद्यानेन यज्ञभागो न्वपद्यत।।9।।
    दक्षो नाम महाभागे प्रजानां पति रूत्तमः। ह्यमेधेन यजते यत्र यान्ति दिवौकसः ।।20।।
11. पद्मपुराण, सृष्टि खण्ड, प्रथम भाग–अ0–5, स्कन्दपुराण, माहेश्वर, खण्ड, पु0– भाग–अ0–2–5, भागवत पुराण, अध्याय–4–5, वामनपुराण–4।
12. भागवत पुराण, स्कन्द–4, अध्याय–2/4–18।
13. भागवत पुराण, अध्याय–3/2–3।
14. गच्छेवा तिष्ठता भद्रे कस्मात्वं हि समागता। अमंगलो हि भर्ता ते अशिवो सो सु मध्यमे।।
    –स्कन्दपुराण, मा0खण्ड, पु0आ0–3/16–18।
15. अकुलीनो वेद बाह्यो भूतप्रेतपिशाचनम् शिव प्र0 रूद्र संहित, द्वितीय सतीखण्ड–2, 28/34–40।
16. पद्मपुराण, सृष्टि खण्ड, प्रथम अध्याय–5।
17. शम्भु कपाली तदजाया तत संसर्गगद्दिगर्हिता। अतः शंभु सती चापि नाहवरे मे मिलिष्यतः।। –कालिका पुराण, अ0–17/12।
18. शिव पुराण, रूद्र संहिता, द्वितीय सती खण्ड–28/34–40।
19. इति बुद्ध या तु तां मालां मनवे स समपर्यत्। गृहीता शिरसा माला मनुनानिज मन्दरे।।34।।
    स्थापिता शयनं यत्र दम्पत्यो रति सुन्दरम्। पशुकर्मरतो रात्रौ माला गन्धेव मोदिता।।35।।
    अभक्त स महीपाल स्तेन पापेन शंकरे। शिवे द्वेष मतिजौतो देव्यां सत्यां तथा नृप।।36।।
    राजं स्तेना पराधेन तज्जन्यो देह एव च। सत्यायोगनिनादन्धः सती धर्म पिद्धण्या।।37।।
    –देवी भागवत पुराण–7/30/34–37।
20. भागवत पुराण स्कन्ध–4/अ0–5/3।
21. स्कन्दपुराण, माहेश्वर खण्ड, प्रथम भाग–अध्याय–3।
22. पद्मपुराण सृष्टि, प्रथम भाग, अध्याय–5।
23. तस्मिन यज्ञो वृतः शम्भुर्नद क्षेणमाहात्मना– कालिका पुराण, अ0–16/30।
    कापालीति विनिश्चित्य तस्य यज्ञार्हता न हि।।
24. देवी भागवत पुराण–7/अ0–30।
25. गच्छवा तिष्ठता भद्रेः कस्मास्त्वं हि समागता। अमंगलो हि भर्ता ते अशिवौ सो समुध्यमे।
    –स्कन्दपुराण, मा. खण्ड– प्रभाग 3/16–18, भागवत पुराण–4/1–5, शिव पुराण, रूद्र संहिता।
26. 26. गंगाकूले सदा युक्तौ देहो वैकुदृया तथा। काली द्वितीय खण्ड– 28/34–40।
    रौनक नाम तन्तीर्य गंगायाः पश्चिमतटे। –पद्मपुराण, सृष्टिखण्ड, प्रथम भाग–5/63।
27. पुराणो में वर्त मान हरिद्वार को गंगद्वार के नाम से जाना जाता है।
28. तत उक्ष्वा बलवता मनोमास्तरहसा। स्वमाश्रमपदं शर्व आससाद त्वरन्वितः।
    आसाद्य देवीं दयितां तदा दाक्षायिणी हरः। मृतां दृष्टवाषि न जहो मृतेतिप्रिय भावतः।
    –कालिकापुराण, अध्याय–17,13–14।
29. वाराह पुराण, अध्याय–22।